



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि - भूमि	22-11-22	10	1-6

हकृति को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, हरियाणा से मिला 30 लाख का प्रोजेक्ट

एचएयू में फसल अवशेषों को तरल उर्वरक में बदलने पर होगा कार्य : प्रो. काम्बोज

हरिभूमि न्यूज | हिंसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंचकुला द्वारा तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है। इस परियोजना के तहत फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज वॉटर व शीश को मिला कर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने प्रगतिशील महक़ोबधोलीजी विभाग को किसानों के लाभ के लिए उच्च



हिंसार। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ अधिकारी।

फोटो: हरिभूमि

गुणवत्ता वाले अनुसंधान परियोजना पारित होने पर बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए वैकल्पिक प्रबंधन करने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

प्रस्तावित परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी, जहां बायोगैस सलरी, सीवेज पानी और शीश जैसे औद्योगिक कचरे के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोबियल अपघटन और किण्वन तकनीकों को उपयोग करके

तरल उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस परियोजना से उत्पन्न तरल उर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ हाइड्रोपोनिक खेती की औसत उपज को बढ़ाने में भी सहायक होगा। इसके अतिरिक्त इस परियोजना से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर रासायनिक उर्वरकों से जुड़े जोखिमों के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रासायनिक उर्वरकों की कुल लागत में भी कमी आएगी।

यह परियोजना माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डॉ. सीला शर्मा एवं हार्दिकस्वर के सहायक प्रोफेसर डॉ. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा और भौतिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार के दिशानिर्देश में तैयार की गई थी। डॉ.

नीरज कुमार ने बताया कि फसल अवशेष जलाने से न केवल पर्यावरण प्रदूषित होता है बल्कि भूमि की उर्वरक क्षमता भी कम होती है। मौजूदा कृषि अवशेष आधारित प्रौद्योगिकियां जैसे खाद बनाना, मशरूम की खेती, काईचोई बनाना और विजली उत्पादन के लिए भस्मीकरण करना इस समस्या को हल करने में आंशिक रूप से प्रभावी है।

हाइड्रोपोनिक तकनीक में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है जिसका मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। तरल उर्वरक प्रयोग करने से इस दुष्प्रभाव से बचने के साथ-साथ रासायनिक उर्वरकों के खर्च को भी कम किया जा सकेगा। इस तरल उर्वरक का उपयोग हाइड्रोपोनिक तकनीक द्वारा फसल सज्जियों के उत्पादन में प्रयोग किया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिन 25 जागरण	22-11-22	4	2-5

तरल उर्वरक में बदले जाएंगे फसल अवशेष

हकृषि को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग से मिला 30 लाख रुपये का प्रोजेक्ट

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग पंचकूला की ओर से तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि आद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है। इस परियोजना के तहत फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज वाटर व शीरा को मिला कर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए बैकल्पिक प्रबंधन करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित



कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ अधिकारी। • विज्ञापि

परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी, जहां बायोगैस सलरी, सीवरेज पानी और शीरा जैसे आद्योगिक कचरे के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोथियल अपघटन और किण्वन तकनीकों को उपयोग करके तरल उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस परियोजना से उत्पन्न तरल उर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ हाइड्रोपोनिक खेती की औसत उपज को बढ़ाने में भी सहायक होगा।

इसके अतिरिक्त इस परियोजना से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर रासायनिक उर्वरकों से जुड़े जोखिमों के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रासायनिक उर्वरकों की कुल लागत में भी कमी आएगी। यह परियोजना माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डा. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डा. लीलावती एवं हार्टिकल्चर के सहायक प्रोफेसर डा. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान

निदेशक डा. जीत राम शर्मा और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. नीरज कुमार के दिशानिर्देश में तैयार की गई थी। डा. नीरज कुमार ने बताया कि फसल अवशेष जलाने से न केवल पर्यावरण प्रदूषित होता है बल्कि भूमि की उर्वरक क्षमता भी कम होती है। मौजूदा कृषि अवशेष आधारित प्रौद्योगिकियां जैसे खाद बनाना, मशरूम की खेती, कार्ड बोर्ड बनाना और बिजली उत्पादन के लिए भस्मीकरण करना इस समस्या को हल करने में आंशिक रूप से प्रभावी है। हाइड्रोपोनिक तकनीक में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है। तरल उर्वरक प्रयोग करने से इस दुष्प्रभाव से बचने के साथ-साथ रासायनिक उर्वरकों के खर्च को भी कम किया जा सकेगा। उर्वरक का उपयोग हाइड्रोपोनिक तकनीक द्वारा पत्तेदार सब्जियों के उत्पादन में प्रयोग किया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

दैनिक भास्कर

22-11-22

2

3-4

फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज वाटर से तरल उर्वरक तैयार करेगा एचएयू

उर्वरक को हाइड्रोपोनिक खेती
में किया जा सकेगा प्रयोग, 30
लाख का प्रोजेक्ट मिला

भास्कर न्यूज़ | हिस्सर



फसल अवशेष प्रबंधन की दिशा में एचएयू को एक और बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई है। फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज वाटर से एचएयू तरल उर्वरक तैयार करेगा। जिसे हाइड्रोपोनिक खेती में किसान इस्तेमाल कर सकेंगे। जिससे खेती की औसत उपज भी बढ़ सकेगी। इस दिशा में एचएयू के वैज्ञानिकों ने प्रयास शुरू कर दिया है।

इसके लिए एचएयू को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंचकूला द्वारा तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है। इस परियोजना के

तहत फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज वाटर व शीरा को मिलाकर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा। बीसी प्रो. बी.आर. काम्बोज ने प्रातिरशील माइक्रोबायोलॉजी विभाग को किसानों के लाभ के लिए उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान परियोजना पारित होने पर बधाई दी।

यह परियोजना माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डॉ. लीला वती एवं हार्टिकल्चर के सहायक प्रोफेसर डॉ. अश्विंद मलिक द्वारा अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार के दिशा निर्देश में तैयार की गई थी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उम 23 जिला	22-11-22	2	4-8

खेतीबाड़ी

एचएयू को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग हरियाणा से मिला 30 लाख का प्रोजेक्ट, कुलपति प्रो. कांबोज बोले-

फसल अवशेषों को तरल उर्वरक में बदलने पर होगा कार्य

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग पंचकुला को ओर से तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए वैकल्पिक प्रबंधन करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी, जहां बायोगैस सलरी, सीवरेज पानी और शीरा जैसे औद्योगिक कचरे के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोबियल अपघटन और



माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डॉ. लीलावती, सहायक प्रोफेसर डॉ. अरविंद मलिक को सम्मानित करते कुलपति प्रो.बीआर कांबोज।

किण्वन तकनीकों को उपयोग करके तरल उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा।

परियोजना के तहत फसल अवशेष,

बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज वॉटर व शीरा को मिला कर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया

जाएगा। परियोजना से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर रासायनिक उर्वरकों से जुड़े जोखिमों के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रासायनिक उर्वरकों की कुल लागत में भी कमी आएगी।

परियोजना माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डॉ. लीला वती एवं हार्दिकलचर के सहायक प्रोफेसर डॉ. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार के दिशा निर्देश में तैयार की गई थी।

डॉ. नीरज कुमार ने बताया कि फसल अवशेष जलाने से न केवल पर्यावरण प्रदूषित होता है बल्कि भूमि की उर्वरक क्षमता भी कम होती है। तरल उर्वरक प्रयोग करने से इस दुष्प्रभाव से बचने के साथ-साथ रासायनिक उर्वरकों के खर्च को भी कम किया जा सकेगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब एक्सप्रेस	22-11-22	4	1-3



कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज के साथ अधिकारीगण।

एच.ए.यू. में फसल अवशेषों को तरल ऊर्वरक में बदलने पर होगा कार्य : प्रो. काम्बोज

हिसार, 21 नवम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंचकूला द्वारा 3 साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल ऊर्वरक का विकास है। इस परियोजना के तहत फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज वॉटर व शीरा को मिला कर तरल ऊर्वरक बनाया जाएगा, जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज ने प्रगतिशील

माइक्रोबायोलॉजी विभाग को किसानों के लाभ के लिए उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान परियोजना पारित होने पर बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए वैकल्पिक प्रबंधन करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी, जहां बायोगैस सलरी, सीवरेज पानी और शीरा जैसे औद्योगिक कचरे के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोबियल अपघटन और किण्वन तकनीकों को उपयोग करके तरल ऊर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस परियोजना से उत्पन्न तरल ऊर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ

हाइड्रोपोनिक खेती की औसत उपज को बढ़ाने में भी सहायक होगा। इसके अतिरिक्त इस परियोजना से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर रासायनिक ऊर्वरकों से जुड़े जोखिमों के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रासायनिक ऊर्वरकों की कुल लागत में भी कमी आएगी।

यह परियोजना माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डॉ. लीला वती एवं हार्टिकल्चर के सहायक प्रोफेसर डॉ. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार के दिशा निर्देश में तैयार की गई थी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अज्ञीत समाचार	22-11-22	8	3-6

एचएयू में फसल अवशेषों को तरल उर्वरक में बदलने पर होगा कार्य : प्रो. बी.आर. काम्बोज हकृति को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, हरियाणा से मिला 30 लाख का प्रोजेक्ट

हिसार, 21 नवंबर (विरेद्वर्युवर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंचकुला द्वारा तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है। इस परियोजना के तहत फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज वॉटर व शीरा को मिला कर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने प्रगतिशील माइक्रोबायोलॉजी विभाग को किसानों के लाभ के लिए उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान परियोजना पारित होने पर बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ अधिकारीगण।

वैकल्पिक प्रबंधन करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी, जहां बायोगैस सलरी, सीवेज पानी और शीरा जैसे औद्योगिक कचरे के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोबियल अपघटन और किण्वन तकनीकों को उपयोग करके तरल उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस परियोजना से उत्पन्न तरल उर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ हाइड्रोपोनिक खेती की औसत उपज

को बढ़ाने में भी सहायक होगा। इसके अतिरिक्त इस परियोजना से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर रासायनिक उर्वरकों से जुड़े जोखिमों के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रासायनिक उर्वरकों की कुल लागत में भी कमी आएगी। यह परियोजना माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डॉ. लीला वती एवं हार्टिकल्चर के सहायक प्रो. डॉ. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान

निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार के दिशानिर्देश में तैयार की गई थी। डॉ. नीरज कुमार ने बताया कि फसल अवशेष जलाने से न केवल पर्यावरण प्रदूषित होता है बल्कि भूमि की उर्वरक क्षमता भी कम होती है। मौजूदा कृषि अवशेष आधारित प्रौद्योगिकियां जैसे खाद बनाना, मशरूम की खेती, कार्बोबॉर्ड बनाना और बिजली उत्पादन के लिए भस्मीकरण करना इस समस्या को हल करने में आंशिक रूप से प्रभावी है। हाइड्रोपोनिक तकनीक में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है जिसका मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। तरल उर्वरक प्रयोग करने से इस दुष्प्रभाव से बचने के साथ-साथ रासायनिक उर्वरकों के खर्च को भी कम किया जा सकेगा। इस तरल उर्वरक का उपयोग हाइड्रोपोनिक तकनीक द्वारा परौदार सक्जिनॉ के उत्पादन में प्रयोग किया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	22-11-22	2	3

**रंगोली और प्रश्नोत्तरी
में स्टूडेंट्स ने की बढ़-
चढ़कर भागीदारी**

सिटी रिपोर्टर • विश्व मत्स्य दिवस पर एचएयू के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय में प्रश्नोत्तरी, रंगोली प्रतियोगिता और अन्य कार्यक्रम किया गया, जिसमें छात्रों के अलावा वैज्ञानिकों ने भागीदारी की। एचएयू के मत्स्य विज्ञान कॉलेज के डीन डॉ. नीरज ने बताया कि विवि के वीसी प्रोफेसर बीमार काम्बोज के दिशा निर्देश पर किसानों की आमदनी बढ़ाने एवं खेती के विविधकरण के तहत मत्स्य विज्ञान कॉलेज के वैज्ञानिक विभिन्न क्षेत्रों में शोध के लिए जुटे हुए हैं। प्रो. बलदेव राज ने कहा कि यदि तकनीकी कौशल से खारे पानी की भूमि पर सफेद झींगा पालन किया जाए तो यह किसानों एवं युवाओं के लिए बहुत अच्छी आय का साधन हो सकता है। प्रतियोगिताओं में विजेताओं को सम्मानित किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
समस्त हरियाणा

दिनांक
21.11.22

पृष्ठ संख्या

कॉलम

एचएयू में फसल अवशेषों को तरल उर्वरक में बदलने पर होगा कार्य : प्रो. बी.आर. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंचकुला द्वारा तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है। इस परियोजना के तहत फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रेटेड सीबरेज वाटर व शीशू को मिला कर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने प्रशासकीय माइक्रोबायोलॉजी विभाग को किसानों के लाभ के लिए उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान परियोजना पारित होने पर सभ्यता देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए



वैकल्पिक प्रबंधन करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी, जहां बायोगैस सलरी, सीबरेज पानी और शीशू जैसे औद्योगिक कचरे के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोबियल अपचयन और किण्वन तकनीकों को उपयोग करके तरल उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस परियोजना से उत्पन्न तरल उर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ

हाइड्रोपोनिक खेती की औसत उपज को बढ़ाने में भी सहायक होगा। इसके अतिरिक्त इस परियोजना से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर रसायनिक उर्वरकों से जुड़े जोखिमों के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रसायनिक उर्वरकों की कुल लागत में भी कमी आएगी। यह परियोजना माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डॉ. लीला खत्री एवं हार्दिकलाल के

सहायक प्रोफेसर डॉ. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार के दिशानिर्देश में शीघ्र की गई थी। डॉ. नीरज कुमार ने बताया कि फसल अवशेष जलाने से न केवल पर्यावरण प्रदूषित होता है बल्कि भूमि की उर्वरक क्षमता भी कम होती है। मौजूदा कृषि अवशेष आधारीत प्रौद्योगिकियां जैसे खाद बनाना, मासकर्म की खेती, कार्टोनिंग बनाना और बिजली उत्पादन के लिए भस्मीकरण करवा इस समस्या को हल करने में आंशिक रूप से प्रभावी है। हाइड्रोपोनिक तकनीक में रसायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है जिसका मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। तरल उर्वरक प्रयोग करने से इस दुष्प्रभाव से बचने के साथ-साथ रसायनिक उर्वरकों के खर्च को भी कम किया जा सकेगा। इस तरल उर्वरक का उपयोग हाइड्रोपोनिक तकनीक द्वारा पत्तेदार सब्जियों के उत्पादन में प्रयोग किया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	22.11.22	----	----

हकृवि में फसल अवशेषों को तरल उर्वरक में बदलने पर होगा कार्य : कुलपति

● हकृवि को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, हरियाणा से मिला 30 लाख का प्रोजैक्ट

सवेरा न्यूज/सुरेंद्र सोढी

हिसार, 21 नवंबर : चौधरी

चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंचकुला द्वारा तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है। इस परियोजना के तहत फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज वॉटर व शीरा को मिला कर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने प्रगतिशील माइक्रोबायोलॉजी विभाग को किसानों के लाभ के लिए उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान परियोजना



कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ अधिकारीगण ।

पारित होने पर बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए वैकल्पिक प्रबंधन करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी, जहां बायोगैस सलरी, सीवेज पानी और शीरा जैसे औद्योगिक कचरे के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोबियल अपघटन और किण्वन तकनीकों को उपयोग करके तरल उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस

परियोजना से उत्पन्न तरल उर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ हाइड्रोपोनिक खेती को औसत उपज को बढ़ाने में भी सहायक होगा। इसके अतिरिक्त इस परियोजना से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर रासायनिक उर्वरकों से जुड़े जोखिमों के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रासायनिक उर्वरकों की कुल लागत में भी कमी आएगी। यह परियोजना माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा

सांगवान, विभागाध्यक्ष डा. लीला वती एवं हार्टिकल्चर के सहायक प्रोफेसर डा. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. नीरज कुमार के दिशानिर्देश में तैयार की गई थी।

डा. नीरज कुमार ने बताया कि फसल अवशेष जलाने से न केवल पर्यावरण प्रदूषित होता है बल्कि भूमि की उर्वरक क्षमता भी कम होती है। मौजूदा कृषि अवशेष आधारित प्रौद्योगिकियां जैसे खाद बनाना, मशरूम की खेती, कार्डबोर्ड बनाना और बिजली उत्पादन के लिए भस्मीकरण करना इस समस्या को हल करने में आंशिक रूप से प्रभावी है। इस तरल उर्वरक का उपयोग हाइड्रोपोनिक तकनीक द्वारा पत्तेदार सब्जियों के उत्पादन में प्रयोग किया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक हिंसा	22.11.22	----	----

एचएयू में फसल अवशेषों को तरल उर्वरक में बदलने पर होगा कार्य: प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंचकुला द्वारा तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु

परियोजना के तहत फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज वॉटर व शीरा को मिला कर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने प. गतिशील माइक्रोबायोलॉजी विभाग को किसानों के लाभ के लिए उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान परियोजना पारित

के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी, जहां बायोगैस सलरी, सीवेज पानी और शीरा जैसे औद्योगिक कचरे के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोबियल अपघटन और किण्वन तकनीकों को उपयोग करके तरल उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस परियोजना से उत्पन्न तरल उर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ हाइड्रोपोनिक खेती की औसत उपज को बढ़ाने में भी सहायक होगा। इसके अतिरिक्त इस परियोजना से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर रासायनिक उर्वरकों से जुड़े जोखिमों के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रासायनिक उर्वरकों की कुल लागत में भी कमी आएगी।

यह परियोजना माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डॉ. लीला वती एवं हार्टिकल्चर के सहायक प्रोफेसर डॉ. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार के दिशानिर्देश में तैयार की गई थी। डॉ. नीरज कुमार ने बताया कि फसल अवशेष जलाने से न केवल पर्यावरण प्रदूषित होता है बल्कि भूमि की उर्वरक क्षमता भी कम होती है। मौजूदा कृषि अवशेष आधारित प्रौद्योगिकियां जैसे खाद बनाना, मशरूम की खेती, कार्डबोर्ड बनाना और बिजली उत्पादन के लिए भस्मीकरण



परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है। इस

होने पर बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए वैकल्पिक प्रबंधन करने



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आज समाज	22.11.22	----	----

एचएयू में फसल अवशेषों को तरल उर्वरक में बदलने पर होगा कार्य: प्रो. बी.आर. काम्बोज



हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंचकुला द्वारा तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है। इस परियोजना के तहत फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज वॉटर व शीरा को मिला कर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने प्रगतिशील माइक्रोबायोलॉजी विभाग को किसानों के लाभ के लिए उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान परियोजना पारित होने पर बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए वैकल्पिक प्रबंधन करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी, जहां बायोगैस सलरी, सीवेज पानी और शीरा जैसे औद्योगिक कचरे के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोबियल अपघटन और किण्वन तकनीकों को उपयोग करके तरल उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस परियोजना से उत्पन्न तरल उर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ हाइड्रोपोनिक खेती की औसत उपज को बढ़ाने में भी सहायक होगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी प्लस	21.11.22	----	----

हकृषि को हरियाणा सरकार से मिला 30 लाख का प्रोजेक्ट

सिटी प्लस न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंचकुला द्वारा तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अवशेष से तरल उर्वरक का विकास है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल



करने के लिए वैकल्पिक प्रबंधन करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित परियोजना एक विकल्प

प्रदान करेगी, जहां कृषि अवशेषों को माइक्रोथियल अपघटन और किण्वन तकनीकों को उपयोग करके

तरल उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस परियोजना से उत्पन्न तरल उर्वरक पर्यावरण को लाभ

पहुंचाने के साथ-साथ हाइड्रोथेनिक खेती की औसत उपज को बढ़ाने में भी सहायक होगा।

यह परियोजना माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डॉ. सीता बती एवं हार्टिकल्चर के सहायक प्रोफेसर डॉ. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार के दिशानिर्देश में तैयार की गई थी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

नभ छोर

23.11.2022

--

--

एचएयू में फसल अवशेषों को तरल उर्वरक में बदलने पर होगा कार्य: प्रो. काम्बोज



नभ-छोर न्यूज ॥ 21 नवंबर हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंचकुला द्वारा तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है। इस परियोजना के तहत फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटीड सीवरेज वॉटर व शीरा को मिला कर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वीआर काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए वैकल्पिक प्रबंधन करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी,

जहां बायोगैस सलरी, सीवरेज पानी और शीरा जैसे औद्योगिक कचरे के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोबियल अपघटन और किण्वन तकनीकों को उपयोग करके तरल उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस परियोजना से उत्पन्न तरल उर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ हाइड्रोपोनिक खेती की औसत उपज को बढ़ाने में भी सहायक होगा। इसके अतिरिक्त इस परियोजना से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर रासायनिक उर्वरकों से जुड़े जोखिमों के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रासायनिक उर्वरकों की कुल लागत में भी कमी आएगी। यह परियोजना माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डॉ. लीलावती एवं हॉर्टिकल्चर के सहायक प्रोफेसर डॉ. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा और मौलिक विज्ञान एवं

मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार के दिशानिर्देश में तैयार की गई थी। डॉ. नीरज कुमार ने बताया कि फसल अवशेष जलाने से न केवल पर्यावरण प्रदूषित होता है बल्कि भूमि की उर्वरक क्षमता भी कम होती है। मौजूदा कृषि अवशेष आधारित प्रौद्योगिकियां जैसे खाद बनाना, मशरूम की खेती, कार्डबोर्ड बनाना और बिजली उत्पादन के लिए भस्मीकरण करना इस समस्या को हल करने में आंशिक रूप से प्रभावी है। हाइड्रोपोनिक तकनीक में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है जिसका मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। तरल उर्वरक प्रयोग करने से इस दुष्प्रभाव से बचने के साथ-साथ रासायनिक उर्वरकों के खर्च को भी कम किया जा सकेगा। इस तरल उर्वरक का उपयोग हाइड्रोपोनिक तकनीक द्वारा पत्तेदार सब्जियों के उत्पादन में प्रयोग किया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिन ५ भास्कर	23.11.22	2	3-4

एचएयू में प्रश्नोत्तरी, रंगोली प्रतियोगिता आयोजित



हिसार | एचएयू में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मौजूद स्टूडेंट्स व अन्य। विश्व मत्स्य दिवस पर एचएयू के मत्स्य विज्ञान कॉलेज में प्रश्नोत्तरी, रंगोली प्रतियोगिता और अन्य कार्यक्रम किए गए। जिसमें छात्रों के अलावा वैज्ञानिकों ने भी भागीदारी की। एचएयू के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय के डीन डॉ. नीरज ने बताया कि विवि के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज के दिशा निर्देश पर किसानों की आमदनी बढ़ाने एवं खेती के विविधीकरण के तहत मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय के वैज्ञानिक विभिन्न क्षेत्रों में शोध के लिए जुटे हुए हैं।